कृषि विष्वविद्यालय जोधपुर
मंडोर – 342 304, जोधपुर, राजस्थान
(Agriculture University Jodhpur)
MANDOR -342 304, Jodhpur, Rajasthan

डॉ एम एल मेहरिया
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

दिनांक :–04.09.2020

–::क्षैत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति (जर्क) की बैठक संपन्न::–

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में दो दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक का समापन आज दिनांक 04.09.2020 को कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर में हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ0 सीताराम कुम्हार, निदेशक अनुसंधान ने बैठक में आये हुए वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे सामने कृषि के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। जिनमें मुख्य रूप से सिंचाई के पानी, मृदा में कार्बनिक पदार्थों व सूक्ष्म पौषक तत्वों की कमी व मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आदि। इन चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि इस प्रकार के अनुसंधान करें ताकि इन चुनौतियों का सामना किया जा सकें तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी हो। इस बैठक में कोविड–19 को मदद्नजर रखते हुए सरकार के निर्देशो की अनुपालना करते हुए बैठक मे सामाजिक दूरी का पूर्णतः ख्याल रखा गया।

हर वर्ष की भांति कृषि में अनुसंधान सलाह एवं नये अनुसंधान कार्यक्रम को तय करने हेतु रबी 2020–21 की इस बैठक में जोधपुर, बाड़मेर, व नागौर जिलों में स्थित कृषि अनुसंधान संस्थान, काजरी, कृषि अनुसंधान केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा कृषि विभाग में कार्यरत कृषि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारियो ने भाग लिया। इस बैठक में रबी 2020–21 हेतु नये अनुसंधान कार्यक्रम तय करने व रबी 2019–20 में हुए अनुसंधानों की समीक्षा कर किसानों के लिए निम्नलिखित नई किस्में व उन्नत तकनीकों की सिफारिश की गई जो कृषि खण्ड प्रथम अ के लिए '**पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज**' में शामिल करने हेतु अनुमोदित की गई–

1. गेंहू की किस्म एच.आई. 1605।
2. मूगफली की फसल मे प्रयुक्त शाकनासी पेन्डामैथालिन 30 प्रतिशत + इमाजीथापर 2.00 प्रतिशत और सोडियम एसीफ्लोरफेन 16.5 प्रतिशत + कलोडीनाफोप प्रोपारजील 8 प्रतिशत का आगामी गेहूँ की फसल में कोई रसायन अवशेष नहीं पाया जाता।
3. जीरे की फसल में बुवाई के समय 10 किलोग्राम सल्फेट सल्फर 67 प्रतिशत डब्ल्यु डी जी + 14 प्रतिशत जिंक तथा बुवाई के 25–30 दिन बाद खड़ी फसल में 7.5 किग्रा सल्फेट सल्फर 90 प्रतिशत डब्ल्यु डी जी प्रति हैक्टेयर की दर से शीर्ष भुरकाव करना प्रभावी पाया गया।
4. अतः शस्य फसल जीरा और इसबगोल का 4:4 का पंक्ति अनुपात में बुवाई करने पर जीरा फसल को जोखिम से बचाव किया जा सकता है।
5. मेथी की जैविक खेती में बीमारियों के नियत्रण के लिए ट्राईकोडर्मा से बीज उपचार व भूमि उपचार (1.5 किलो प्रति हैक्टेयर) के साथ एन.एस.के.ई. का 5 प्रतिशत बुवाई के 60 दिन बाद व नीम के तेल का 1.5 प्रतिशत 70 एवं 85 दिन बाद छिड़काव करने की सिफारिश की गयी।

डॉ. सीताराम कुम्हार, निदेशक अनुसंधान द्वारा अवगत कराया गया कि किसानों की समस्याओं का जो फीडबैक प्राप्त हुआ है, उस आधार पर इन समस्याओं के निदान हेतु आने वाली रबी ऋतु में अनुसंधान किया जाएगा।

बैठक में संयुक्त निदेशक कृषि खण्ड जोधपुर श्री वी.के. पाण्डे ने सम्बोधित करते हुए विभाग के अधिकारियों से आहवान किया कि किसानों की समस्याओं की प्रतिपुष्टि लेकर वैज्ञानिकों को बतायें ताकि उनका समाधान हो सकें।

अंत में बैठक में आये सभी अधिकारियों व कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर के फार्म प्रक्षेत्र पर खरीफ 2020 की फसलों पर किये जा रहे परीक्षणों व बीज उत्पादन कार्यक्रम (मूंग, तिल, ग्वार, मोठ इत्यादि) की विभिन्न किस्मों के लिए भ्रमण एवं अवलोकन किया।

बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा –डॉ. ईश्वर सिंह, उप निदेशक कृषि श्री वी. एस. सौलंकी, रिजनल मैनेजर, राजस्थान राज्य बीज निगम जोधपुर– डॉ बी के द्विवेदी, परियोजना निदेषक आत्मा हरिश मेहरा,, उपनिदेशक ए. टी. सी. रामपुरा ओ. पी. पाण्डे, सहायक निदेशक उद्यान, श्री बी.पी. मण्डा, सहायक निदेशक कृषि श्री भानाराम विश्नोई, सहित इन जिलों के कृषि विज्ञान केन्द्रों, काजरी व कृषि क्षेत्र के विभिन्न वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों ने भाग लिया ।

(डॉ. एम. एल. मेहरिया)